'राग दरबारी' में शिक्षा व्यवस्था का व्यंग्यात्मक *चित्रण*

निधि बागरी (शोधार्थी)

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, मध्यप्रदेश

'राग दरबारी' उपन्यास श्रीलाल शुक्ल जी का सन् 1968 में प्रकाशित एक कालजयी रचना हैं। सन् 1969 में इस उपन्यास को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस उपन्यास को स्वतंत्रता के बाद शहरीकरण से प्रभावित होने के कारण ग्रामीण जीवन की मूल्यहीनता को परत दर परत उघाड़ने वाले उपन्यास के रूप में देखा जा सकता हैं। इस उपन्यास पर दूरदर्शन धारावाहिक का निर्माण भी हुआ। श्रीलाल शुक्ल का पहला उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज'(1957) तथा पहला प्रकाशित व्यंग्य 'अंगद का पांव'(1958) ।

श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' एक ऐसा उपन्यास हैं, जिसमें भारतीय ग्रामीण समाज की शिक्षा व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया गया है। इस उपन्यास में शिक्षा व्यवस्था को एक ऐसे तंत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अपने मूल उद्देश्य 'ज्ञान प्रदान करना' से भटककर भ्रष्टाचार, राजनीति और विडंबनाओं का केंद्र बन गया हैं।

शोध शब्द - शिक्षा, भ्रष्टाचार, छंगामल कालेज, प्रिंसिपल, खन्ना मास्टर, मालवीय मास्टर, राजनीति ।

श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यास में शिक्षा पद्धति में स्वतंत्रता से पहले के स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में भी उसका स्वरूप परिलक्षित होता है। उपन्यास में 'शिवपालगंज' कि शिक्षा पद्धति को केंद्र में रख कर सभी क्षेत्रों कि शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया है।

शोध कार्य को हमारे शिक्षा जगत में सर्वोच्च शिक्षा माना जाता है, जिसे रंगनाथ द्वारा इस तरह व्यक्त किया गया-"कहा तो, घास खोद रहा हूँ। इसी को अंग्रेजी में रिसर्च कहते हैं।"[1] शोध के क्षेत्र में जो धंधली हो रही है उसका वर्णन

भी लेखक ने किया है। यूनिवर्सिटी में लैक्चरार न होना उसे पसंद हैं, क्योंकि वह उसे और भी नरक समझता है। वहाँ पर किसी से भी थीसिस लिखा लेना बताया है, जो वर्तमान शिक्षा जगत में भी प्रचलित हैं।

छंगामल इंटर कॉलेज के माध्यम से शिक्षा पर करारा व्यंग्य किया गया है। रूप्पन बाबू जो 18 साल के हैं, जो दसवीं कक्षा में पिछले तीन साल से पढ़ते रहे हैं। रूप्पन देश कि शिक्षा पद्धति के बारे में कहते-"तुम जानते नहीं हो दादा, इस देश की शिक्षा पद्धति बिलकुल बेकार है। बड़े-बड़े नेता यही कहते हैं। मैं उनसे सहमत हूँ।"[2] जब भी चुनाव होने वाले होते है तो नेतागण के दो हथियार अवश्य होते है, एक तो 'शिक्षा' दूसरा 'धर्म'। वह इन्हीं से चुनाव लड़ते हैं। वह नवयुवकों के लिए नौकरियों का प्रलोभन देते हैं और जब पुनः चुनाव आते है तो नौकरियां निकालते हैं। इसमें भी भ्रष्टाचार का रूप मिला होता है। प्रत्येक नया नेता पुरानी शिक्षा पद्धति को बेकार बता कर नयी शिक्षा पद्धति को लागू करने कि बात कहता है।

वैद्य जी जो छंगामल इंटर कॉलेज के मैनेजर हैं साथ ही राजनीति से भी इनका संबंध हैं। वैद्य जी के दवाखाने का एक

विज्ञापन देखें 'जीवन से निराश नवयुवकों के लिए आशा का संदेश'! वह कहते हैं-" शांत रहो रूप्पन। इस कुव्यवस्था का अंत होने ही वाला है।"[3] यहाँ पर लेखक ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आशावादी दृष्टिकोण रखा है कि भविष्य में इस व्यवस्था का अंत हो, जो नक्ल या रिश्वत से नौकरी लेते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जब राजनीति का प्रवेश हो जाता है तो, वह खराब हो जाती है। उसे राजनेताओं से अलग ही रखना चाहिए। रूप्पन कहते हैं- "फिर तुम इस कॉलेज का हाल नहीं जानते।लुच्चों और शोहदों का अड्डा है। मास्टर पढ़ाना-लिखाना छोड़कर सिर्फ पालिटिक्स भिड़ाये हैं।"[4]

विद्यालय को 'शिक्षा का मंदिर' कहा जाता है, लेकिन उसमें शिक्षा का नाममात्र का भी स्थान नहीं है। शिक्षा व्यवस्था को केवल गाँव का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे देश की स्थिति के रूप में दिखाया गया है। लेखक व्यंग्यात्मक रुप में कहते हैं "हम असली भारतीय विद्यार्थी हैं; हम नहीं जानते कि बिजली क्या है, नल का पानी क्या है, पक्का फर्श किसको कहते हैं; सैनिटरी फिटिंग किस चिड़िया का नाम है। हमने विलायती तालीम तक देसी परम्परा में पायी है और इसीलिए हमें देखो, हम आज भी उतने

ही प्राकृत हैं! हमारे इतना पढ़ लेने पर भी हमारा पेशाब पेड़ के तने पर ही उतरता है, बंद कमरे में ऊपर चढ़ जाता है।"[5] वर्तमान समय में सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों कि स्थिति मे बहुत हद तक सुधार भी हुए हैं।

मास्टर मोतीराम बी.एस.सी.पास थे, लड़कों को आपेक्षिक घनत्व पढ़ा रहे थे। परंतु उनका पूरा ध्यान अपनी आटा चक्की पर ही होता है। वो आपेक्षिक घनत्व को कुछ इस प्रकार से बच्चों को समझाते "मान लो, तुमने एक आटा चक्की खोल रखी है और तुम्हारे पड़ोस में तुम्हारे पड़ोसी ने दूसरी खोल रखी है। तुम महीने में उससे पांच सौ रूपया पैदा करते हो और तुम्हारा पड़ोसी चार सौ। तुम्हें उसके मुकाबले ज्यादा फायदा हुआ। इसे साइंस की भाषा कह सकते हैं कि तुम्हारा आपेक्षिक लाभ ज्यादा है। समझ गए?"[6] शिक्षकों में पढ़ाई के प्रति कोई रूचि नहीं हैं, वे केवल औपचारिकता पूरी करते हैं वहीं छात्र भी शिक्षा के प्रति गंभीर नहीं है, और विद्यालय में केवल समय बिताने आते हैं।

मास्टर मालवीय जब कहते हैं कि "पर यह तो नवां दर्जा है। मैं वहाँ सातवें को पढ़ा रहा हूँ।"[7] इस पर प्रिंसिपल खन्ना साहब उसे डांटने लगते हैं और नवां व सातवें

दर्जा को मिलाकर एक साथ क्लास लगा देते हैं। यहाँ शिक्षक कि मजबूरी को दिखाया गया कि वह सही होने पर भी कुछ बोल नही सकता है। स्कूल या विद्यालयों में शिक्षक भर्ती न होने के कारण सब को एक साथ बैठा दिया जाता है।

रंगनाथ कि मूर्ति को लेकर जब पुजारी से बेहस हो जाती है, तो सनीचर कहता "पढ़कर आदमी पढ़े- लिख लोगों की तरह बोलने लगता हैं। बात करने का असली ढंग भूल जाता है।"[8] यहाँ पर पढ़े-लिखे लोगों की तरह बोलने लगता है, व्यंग्य है कि जब कोई व्यक्ति पढ़-लिख लेता है तो वह तर्क करने लगता हैं, सही-गलत में अंतर समझने लगता हैं। परंतु वह जो कुछ कहता है, उसे ही लोग गलत ठहराने लगते हैं। रूप्पन बाबू कहते हैं "बात तो ठीक ही है। पर कसूर तुम्हारा भी नहीं, तुम्हारी पढ़ाई का हैं।"[9]

कैलाश नाथ यादव का मानना है कि "श्री लाल शुक्ल जी हिंदी के उन अप्रतिम व्यंग्य शिल्पियों में से एक है, जिनके समूचे लेखन में व्यंग्यात्मकता धड़कन की तरह मौजूद है। उनकी रचनात्मकता अमोघ थी, जैसे प्रकृति प्रदत्त हो, साथ ही उनमें अपने लक्ष्य से विचलित न होते हुए पूरी ईमानदारी से

एक सार्थक लेखन करते रहने की अपूर्व क्षमता थी। अपनी यथार्थ परख दृष्टि से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। जिनका जीता जागता उपन्यास 'राग दरबारी' है।"[10]

निष्कर्ष:-

शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रथम अनिवार्यता होती है साथ ही वह उसकी शाक्ति का केंद्र भी।'राग दरबारी'लेखक ने इस प्रकार से शैक्षिक विद्रुपताओं को उठाने का प्रयास किया है। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय भावना और शिक्षण-व्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उपन्यास के संवाद और घटनाएं शिक्षा व्यवस्था पर गहरा कटाक्ष करती है।'राग दरबारी' कि भाषा के संदर्भ में राधा दीक्षित का कहना है कि "राग दरबारी का लेखक भाषा के प्रति बेहद संवेदनशील और सर्तक है। भाषा एक दर्रे पर नहीं भागती। उसका प्रयोग परिवेश और पात्र को ध्यान में रखते हुए किया गया है।"[11] वर्तमान शिक्षा पद्धति अत्याधिक दोषपूर्ण बन चुकी है, मानो "वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।"[12] इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार की

आवश्यकता है, लेकिन इसे हास्यास्पद ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-06
2. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-25
3. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-25
4. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-25
5. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-14
6. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-15
7. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-18

8. श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-100

9.श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ ससंख्या-100

10. कैलाश नाथ यादव - International journal of scientific & innovation research studies, पृष्ठ संख्या-116

11. डॉ.राधा दीक्षित - राग दरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ संख्या- 249

12.श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, पन्द्रहवां संस्करण, पृष्ठ संख्या-09